RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 June 2019, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd June 2019

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष : सत्रहवां
अंक : दूसरा
जून – 2019

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

अजायब की प्रार्थना 5

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

धन्यवाद का दिन 17

सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब 25

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा संदेश

संदेश 33

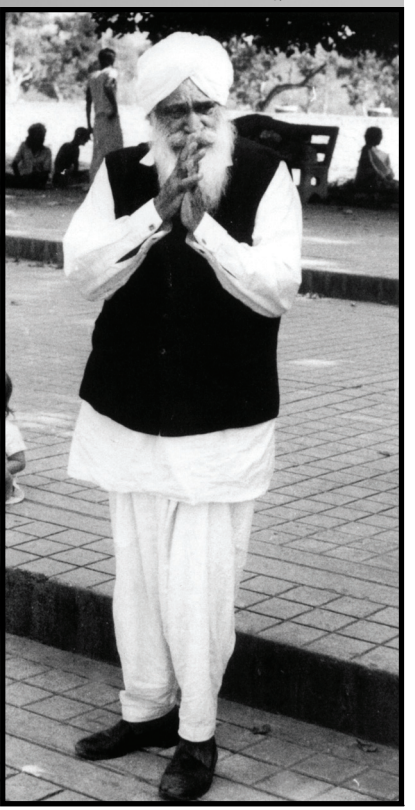

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **परमजीत सिंह, ज्योति सरदाना**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस-1, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 - 207 - मूल्य - पाँच रुपये

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

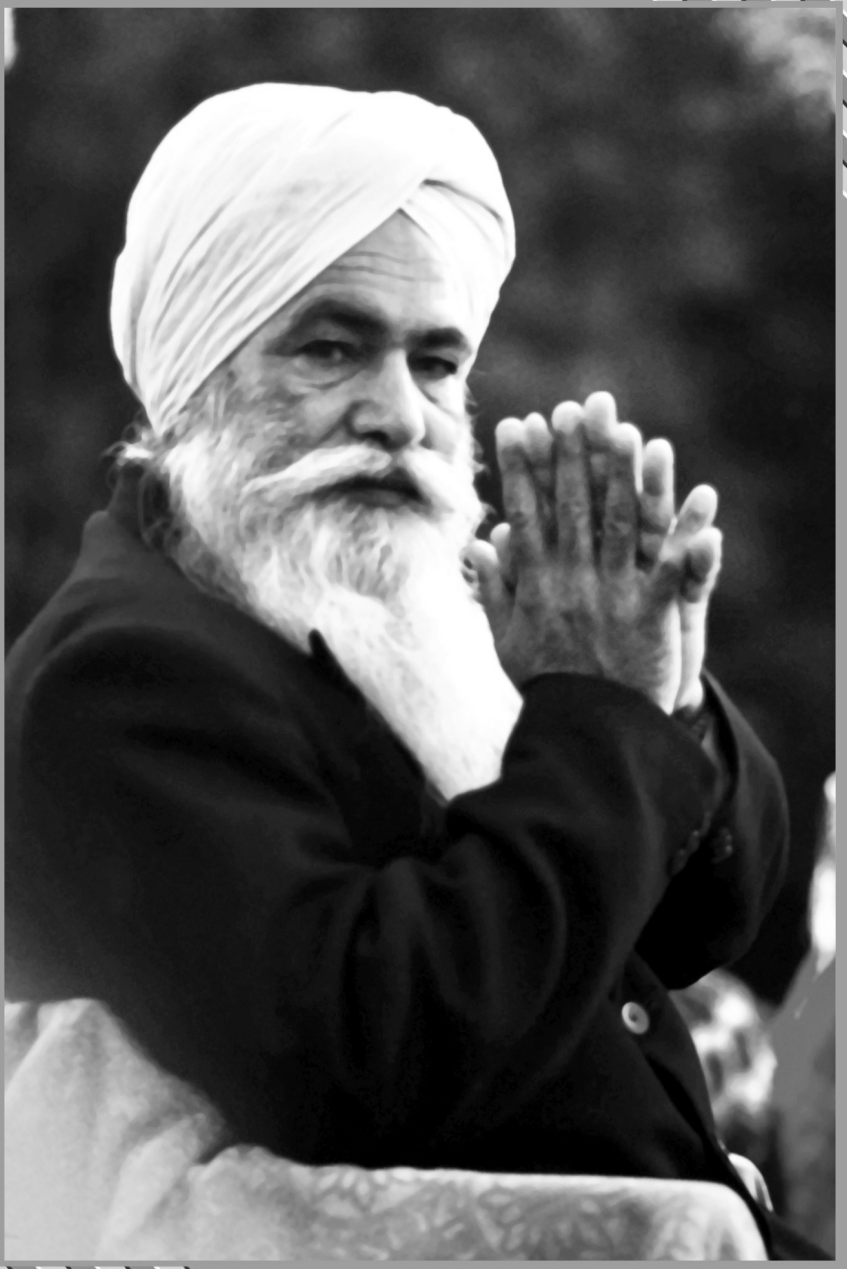

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

अजायब की प्रार्थना

स्वामी जी महाराज की बानी DVD-510 16 पी.एस.राजस्थान

नामदान अब सतगुरु दीजे, काल सतावे स्वाँसा छीजे।

यह स्वामी जी महाराज की बानी है। सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे किसी कौम, किसी समाज में पैदा हुए, किसी भी वक्त में आए हमेशा ही महात्मा सतगुरु की महिमा, नाम की महिमा बयान करते आए हैं।

आप किसी भी महात्मा की बानी पढ़कर देखें! सभी महात्माओं ने इन चीजों पर जोर दिया है कि सतसंग वह पानी है जो आत्मा की खेती को हरा-भरा रखता है। नाम हमें सतगुरु से मिलता है, हम सतगुरु के बिना अंदर के मंडलो में नहीं जा सकते। सतगुरु तजुर्बेकार होता है। सतगुरु से रास्ता प्राप्त करके भी हम नाम को प्रकट नहीं कर सकते जब तक हम अपने गुरुदेव की मदद प्राप्त नहीं कर लेते।

स्वामी जी महाराज इस शब्द में हमें प्यार से समझाते हैं कि सेवक गुरु के आगे प्रार्थनाएं करता है और गुरु को क्या समझता है? शिष्य एक अपराधी की तरह अपने गुरु के आगे सच्चे दिल से खड़ा हो जाता है जिस तरह मरीज डॉक्टर के आगे सच्चे दिल से पुकार करता है, ''मैं मरीज हूँ तू मेरी दवाई-बूटी कर मेरा ईलाज कर।'' जब शिष्य गुरु के आगे मरीज की तरह पुकार करता है तो गुरु भी हमारी आत्मा को जन्म-जन्मांतरों की जो बीमारी लगी हुई है उसे दूर करने की कोशिश करता है। वह हमें वो दवाई देता है जिससे हमारी आत्मा के सारे ही रोग नष्ट हो जाते हैं।

जब तक हम अपना शरीर छोड़कर सहंसदल कँवल तक नहीं पहुँच जाते और अंदर के मंडलो में जाकर गुरु की पोजीशन नहीं देखते कि कौन-कौन सी ताकतें गुरु का सत्कार करती हैं, गुरु के आगे झुकती हैं। अंदर गुरु की क्या पोजीशन है, परमात्मा की नजर में हमारा गुरु क्या है? तब तक हमारे अंदर सच्ची नम्रता, सच्चा प्यार, सच्ची आजजी नहीं आती।

सन्त हमें यह बताते हैं कि हमारी आँखों के पीछे पहली स्टेज संहसदल कँवल है, यहाँ का नूर प्रकाश भी देखने के काबिल है जिसे बयान नहीं किया जा सकता। यहाँ पहुँचकर आत्मा का पहला स्थूल पिंजरा उतर जाता है, इससे आगे त्रिकुटी है। त्रिकुटी और संहसदल कँवल को मिलाने वाला रास्ता टेढ़ा और सीधा है।

जब आत्मा त्रिकुटी में पहुँचती है वहाँ का नूर भी बयान से बाहर है, वहाँ पहुँचकर आत्मा का दूसरा सूक्ष्म पिंजरा उतर जाता है। यही मन का स्थान है इसके आगे ब्रह्म के शिखर तक मन साथ जाता है, यहाँ हमारे पिछले जन्मों के कर्मो का स्टॉक है। यहाँ रहकर आत्मा को काफी अरसा अभ्यास करना पड़ता है, सतगुरु की दया से हमारे जन्म-जन्मांतरों के बुरे कर्म खत्म हो जाते हैं। उसके ऊपर हमारी आत्मा से तीसरा कारण का पिंजरा भी उतर जाता है, आत्मा आजाद होकर पारब्रह्म में पहुँच जाती है।

सन्तमत में इसे दसवां द्वार भी कहते हैं, यहाँ पहुँचकर आत्मा पिंजरों से निकलकर आजाद हो जाती है। तब आत्मा रोती है कि मैं तो संसार में ऐसे ही पत्थर, पानी, जड़ चीजों को पूजती रही और समाजों में जकड़ी रही। मेरे तुल्य तो संसार में कोई था ही नहीं। मैं खुद चेतन हूँ, मैं आत्मा हूँ फिर आत्मा रोती और तड़पती है।

यह हंसों और साधुओं का देश है जो देखने के काबिल है, यहाँ का नूर भी बयान नहीं किया जा सकता। जो आत्मा यहाँ पहुँचकर इस जगह को देख लेती है वह इंसान कहलवाने की हकदार है। वहाँ से आत्मा आगे जाने की तैयारी करती है जिसे महासुन्न भी कहा गया है। दसवें द्वार में पहुँची हुई आत्मा की रोशनी बारह सूरज की है जिसे महासुन्न तिमिरखंड कहकर बयान किया गया है लेकिन वहाँ इसकी अपनी रोशनी कोई काम नहीं देती आगे सतगुरु इसे अपनी रोशनी से लेकर जाता है। आप अंदर जाकर देखें! वहाँ आत्माएं कैसे भूल-भूलैया में फँसी हुई हैं।

वहाँ पहुँचकर पता लगता है कि गुरु का काम अंधेरे में प्रकाश करना है, गुरु का कितना प्रकाश है? गुरु किस तरह हमें महासुन्न से निकालकर आगे लेकर जाता है? आगे चौथी स्टेज आ जाती है जिसे सन्तमत में भँवरगुफा कहकर बयान किया गया है जब आत्मा वहाँ पहुँचती है तो आत्मा मस्त हो जाती है, अपनी सुध-बुध खो बैठती है; यह सच्चखंड का दरवाजा है। वहाँ पहुँचकर इसे पता लगता है कि परमात्मा जिस तत्व का बना है मैं वही हूँ। परमात्मा समुंद्र है और मैं बूँद हूँ, फर्क सिर्फ विछोड़े का है।

पाँचवी स्टेज सच्चखंड है। वहाँ सतपुरुष के एक रोम का मुकाबला यहाँ के करोड़ो सूरज-चंद्रमा भी नहीं कर सकते। वहाँ पर जो ताकत काम कर रही है उसे किसी महात्मा ने नूर किसी ने प्रकाश कहकर बयान किया है। वहाँ पहुँचने वाली आत्माएं उस ताकत के वश में हो जाती हैं जिसे वह हिलाता है वह हिलती हैं, वह जो कहता है वे वही करती हैं।

वहाँ एक दया का समुंद्र है जब आत्माएं उसमें जाती हैं तो उनके दिल में दया आती है कि मैं अपने और भाईयों को भी ले

आऊं जो संसार में दुख उठा रहे हैं। जिनका नसीब होता है वही उस आत्मा से फायदा उठा सकते हैं, वही वहाँ पहुँचती हैं। बाकी शरीर छूटा और काल के पंजे जन्म-मरण में फँस जाते हैं।

नाम सच्चखंड के अंदर है, गुरु नाम देने के लिए आते हैं। 'नाम' लफ्ज बहुत छोटा है लेकिन जो ताकत नाम में है हम उसका अंदाजा नहीं लगा सकते क्योंकि नाम ने सारी दुनिया की रचना पैदा की है, नाम के आधार पर खंड-ब्रह्मांड खड़े हैं। बेशक हम सारे सतसंगी अपनी जगह अपने गुरु का आदर-सत्कार करते हैं और गुरु पर भरोसा भी करते हैं लेकिन जो अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों पर्दे उतारकर अंदर चले जाते हैं, उनके अंदर गुरु के लिए सच्ची इज्जत, सच्ची तड़प है।

आप किसी कमाई वाले महात्मा की बानी पढ़कर देखें! वह गुरु के आगे अपने आपको गरीब, दास या लाला-गोला कहकर बयान करता है। गुरु गोबिंद सिंह जी अपनी बानी में लिखते हैंः

सगल द्वार को छोड़कर, आया तुहारे द्वार।
बाँहें गहे की लाज रख, गोबिंद दास तुम्हार।।

मैं जब बाबा सावन सिंह जी के चरणों में जाया करता था। उनके ऊपर एक विशाल चाननी लगी हुई थी। उस चाननी पर जगह-जगह लिखा था बाबा जयमल सिंह जी दया करें, मेहर करें, हमारे तपते हृदयों को ठारें।

आप आमतौर पर मेरे लिखे भजन पढ़ते हैं उनमें मैं अपने आपको अपने गुरुदेव के आगे गरीब या दास कहता हूँ। मैं रुलता-फिरता था कि तेरे बगैर कौन मेरी बात पूछता था? तू मेरी आत्मा का परमात्मा है। हम जब तक बाहर बैठे हैं अंदर नहीं जाते हम तब

तक लोगों को बाहरी तौर पर नम्रता दिखाते हैं। अंदर मन मजबूत होता है लेकिन बाहर से झुकते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम दुनिया के साथ धोखा कर रहे हैं। मन हमें अंदर नम्रता पैदा नहीं करने देता लेकिन बाहर दुनिया को दिखाने के लिए बहुत ज्यादा नम्रता दिखाते हैं। अगर आप अंदर जाएं तो जो बात दिल में होगी वही दिमाग में होगी फिर जो बात जुबान से निकलेगी वह अंदर से आएगी।''

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हे सतगुरु! श्वांस घट रहे हैं, उम्र व्यतीत हो रही है। मैं बीमार हूँ तू मुझे दवाई दे, मेरे अंदर नाम को प्रकट कर।'' यहीं सोलह पी. एस. में जब परमपिता कृपाल ने मेरी आँखों पर हाथ रखकर मुझे गुफा में बिठाया और कहा, ''आँखें अंदर की तरफ खोलनी है। तेरा काम भजन-अभ्यास करना है मैं ही तेरे पास आऊंगा।'' मैं एक बच्चे की तरह रोया कि हे पिता! मैं कुछ भी नहीं हूँ, मैं कुछ करने के लायक भी नहीं हूँ। मेरी लाज आपके हाथ में है, मेरी लाज रखना। मैं यही कहा करता हूँ कि अजायब एक कौड़ी के बराबर भी नहीं था। कलयुग में धन्य कृपाल कहने से उसने मेरी लाज रखी।

तिल तिल दा अपराधी तेरा, रत्ती रत्ती दा चोर।
पल पल दा मैं गुनही भरया बख्शी अवगुण मोर।।
किसी काम का थे नहीं कोई न कौडी दे।
कृपाल सिंह सतगुरु मिलया भई अमोलक देह।।

अगर कोई आदमी सो रहा हो, हम उसे आवाज लगाएं तो वह जाग जाता है। आपका गुरु परमात्मा हमेशा ही जागता है वह कभी सोता नहीं। अगर आप अपने गुरु को प्यार से पुकारेंगे उसके आगे फरियाद करेंगे तो वह आपकी फरियाद को जरुर सुनेगा,

वह अपना दरवाजा खोलेगा। गुरु तो कहता है कि सेवक फरियाद करे मैं देने के लिए तैयार हूँ।

दुख पावत मैं निस दिन भारी। गही आय अब ओट तुम्हारी।।

शिष्य कहता है कि मैं जागते हुए भी दुखी हूँ और सोते भी दुखी हूँ। अब मैं तेरी शरण में आया हूँ, तू मुझ पर दया करके मुझे बख्श दे। यहाँ पर आकर हम सब कहते हैं कि हम रोज गुरु के आगे प्रार्थनाएं करते हैं लेकिन गुरु सुनता नहीं। जरा ठंडे दिल से सोचकर देखें! क्या हम गुरु से मिलने के लिए प्रार्थनाएं करते हैं? हम जब पुकार करते हैं तो दुनिया के सामान जिसमें हम फँसे हुए है वही माँग रहे होते हैं लेकिन हमें यह नहीं पता कि वह सामान हमारे फायदे का है या दुख का कारण बनेगा।

तुम समान कोइ और न दाता। मैं बालक तुम पिता और माता।।

आप कहते हैं, ''गुरु जैसा कोई दाता नहीं। मैं चालीस दिन का बच्चा बनकर आपके आगे अरदास करता हूँ।'' महाराज सावन सिंह जी कहते है और सभी सन्त यही कहते हैं कि सन्तों के पास चालीस दिन के बच्चे की तरह बनकर जाएं। एम.ए. पढ़े हुए को भी चालीस दिन का बच्चा बनना पड़ता है। हम जब स्कूल में दाखिल हुए थे उस समय हम बिल्कुल अंजान थे हमें विद्या के बारे में कोई ज्ञान नहीं था लेकिन टीचर को ज्ञान था टीचर ने हमें पढ़ाया और हम एम.ए.पास हो गए। इसी तरह रूहानियत में हम एक बच्चे की तरह है अगर हमारे अंदर शौंक है लगन है तो सन्त भी हमें रुहानी विद्या का ज्ञान देते हैं और हमारी तरक्की करवाते हैं।

मो को दुखी आप कस देखो। यह अचरज मोहिं होत परेखो।।

अब शिष्य कहता हैं, ''मुझे बहुत आश्चर्य है। मैं दुखी हूँ, मुझे यकीन है कि तू मुझ दुखी को देख नहीं सकेगा क्योंकि तू मेरा माता और पिता है। बच्चे की संभाल करना माता-पिता का फर्ज है।''

मैं हूं पापी अधम विकारी। भूला चूका छिन छिन भारी।।

शिष्य कहता हैं, ''मैं पापी हूँ, मैं भूला-भटका हुआ हूँ। तेरी अंगुली छोड़कर ख्वार हो रहा हूँ।''

अवगुन अपने कहँ लग बरनूँ। मेरी बुधि समझे नहिं मरमूं।।

आप कहते हैं कि मैं अपनी बुद्धि से यह फैसला नहीं कर सकता कि मेरे अंदर कितने अवगुण हैं मैंने कितने ही पापों के बोझ सिर पर उठा रखे हैं। पता नहीं कितने जन्मों से ये पाप इकट्ठे कर रहा हूँ। आत्मा निर्दोष है अगर आत्मा कोई पाप-ऐब करके तौबा करती है मन फिर मजबूत हो जाता है और कहता है कि यह पाप नहीं हैं इसलिए मन भी बुद्धि के नाप-तोल में ही उलझा बैठा है।

तुम्हरी गति मति नेक न जानूं। अपनी मति अनुसार बखानूं।।

अब शिष्य कहता है कि मैं तेरी महिमा समझ नहीं सकता। आप सतलोक के रहने वाले कुलमालिक हैं। मैं धरती पर रहने वाला एक मामूली सा जीव हूँ और मन मुझे चलने नहीं देता मैं मजबूर हूँ, लाचार हूँ।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तों की महिमा सन्त ही जान सकते हैं। कूंजो की सार कूंजे ही समझ सकती हैं जो उनके साथ उड़ती हैं।'' तुलसी साहब कहते हैंः

जे कोई कहे सन्त को चीन्हां, तुलसी हाथ कान पर दीन्हां।

तुम समरथ और अंतरजामी। क्या क्या कहूं मैं सतगुरु स्वामी।।

अब शिष्य कहता है, ''मैं अपनी बुद्धि के मुताबिक अपने ऐब बयान करता हूँ पता नहीं मैं ठीक करता हूँ या नहीं? तू समर्थ है हर जगह व्यापक है और दिल की जानता है। मैं तुझसे चोरी करता हूँ और तू हर तरफ से मुझे देख रहा है।'' अगर हम यह समझ लें कि हमारा गुरु अंतर्यामी है वह हमारे हर पाप व हर हरकत को देख रहा है तो हम कोई पाप या ऐब कर ही नहीं सकते।

अगर पाँच साल का बच्चा भी खेत के पास बैठा हो तो हम वहाँ से एक आम तोड़ने के लिए भी तैयार नहीं होंगे कि इंसान का बच्चा देख रहा है। समर्थ गुरु हमारे अंदर शब्द-रुप होकर बैठा है वह हमारी हर हरकत को देख रहा है। उसके होते हुए भी हम कहते हैं कि हमें कौन देख रहा है? हम जो चाहे सो करें। दरवाजा बंद करके चाहे जो पाप-ऐब करें।

मौज करो दुख अंतर हरो। दया दृष्टि अब मो पै धरो।।
माँगूँ नाम न माँगूँ मान। जस जानो तस देओ मोहिं दान।।

अब शिष्य विनती करता है कि मैं तो आपसे सिर्फ नाम का दान माँगता हूँ। मैं दुनिया की मान-बड़ाई और धन-दौलत नहीं माँगता। आपको जैसे भी ठीक लगे मेरा कल्याण करें, मेरे अंदर नाम का प्रकाश करें। दुनिया की मान-बड़ाई मेरे साथ नहीं जाएगी। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन तुध होर जे मंगणा, सिर दुखा दे दुख।
दे नाम संतोखिया, उतरे मन की भुख।।

मैं अति दीन भिखारी भूखा। प्रेम भाव नहिं सब विधि रुखा।।

मैं दीन होकर भिखारी बनकर आपके दरवाजे पर आया हूँ। मैं भूखा हूँ। आप चाहे तो मुझे जल्दी भीख दें या देर से भीख दें

लेकिन मुझे अपने दरवाजे से जरूर दया की थोड़ी सी खैर दें। मैं सच्चे दिल से तड़पता हूँ।

कैसे दोगे नाम अमोला। मैं अपने को बहु विधि तोला।।

शिष्य कहता है कि मेरे अंदर प्रेम नहीं तेरा डर नहीं, मैं निडर हो गया हूँ। मुझे समझ नहीं आ रहा कि तू इतनी अमूल्य वस्तु मुझे कैसे देगा? आप बाबा सोमनाथ जी का भजन गाते हैं:

तेरा नाम रसमुल्ला जी, जिन्होंने नाम जपा।।

बीकानेर के रसगुल्ले बहुत ही मशहूर हैं। ये रसगुल्ले चीनी के घोल में रखे जाते हैं हर आदमी इन्हें खाकर खुश होता है। यहाँ पर आमतौर पर शादियों में ये रसगुल्ले इस्तेमाल किए जाते हैं। बाबा सोमनाथ जी ने नाम की तुलना रसगुल्ले के साथ की है कि जिन्होंने इसका स्वाद लिया है वे ही बता सकते हैं। जिसने नाम का स्वाद लिया है वही नाम का रस बता सकता है।

होय निरास सबर कर बैठा। पर मन धीरज धरे न नेका।
शायद कभी मेहर हो जावे। तो कहूँ नाम नैक मिल जावे।।

मैं अपने आपको तोलकर बैठा हूँ कि मैं ऐसे गुरु की सोहबत में भी जाने के लायक नहीं हूँ। मैं निराश हूँ कि मैंने क्यों पाप किए, क्यों पापों के बोझ सिर पर रखे? लेकिन अभी भी मेरे मन में एक आशा है शायद! मुझ पर सतगुरु की मेहर हो जाए और वह मुझे नाम के साथ जोड़ दें, नाम बख्श दे। मैं कहा करता हूँ:

कूड़ा गुरु दी गली दा सिर ढ़ोना शायद मन मेहर पे जाए।
लीरा लीरा करके सूहे, कासा फड़के बैठे बूहे, शायद मन मेहर पे जाए।।

बिना मेहर कोइ जतन न सूझे। बख्शिश होय तभी कुछ बूझे।।

आप कहते हैं, ''चाहे हम कितनी भी कोशिश कर लें गुरु की दया के बिना कुछ नहीं बनता, मन हमेशा धोखा देता रहता है।''

किनका नाम करे मेरा काज। हे सतगुरु मेरी तुमको लाज।।

अब शिष्य बड़े ही प्यार से कहता है कि हे सतगुरु! मेरे अंदर थोड़ा सा नाम प्रकट कर दें बस! मेरा काम बन जाएगा। मैं कभी-कभी अपने परमपिता कृपाल के साथ ऐसी बातें कर लेता था कि आप थोड़ा सा मेरी तरफ देखें, मुझे रस आ जाएगा। आपका इस तरह देखना मुझे बहुत लुभाता था।

सज्जनों! गुरु के अंदर मेहर का समन्दर हमेशा ही उछलता रहता है। वह देने के लिए ही आता है लेकिन हम मन के आधीन होकर गुरु के आगे सच्चे दिल से पुकार नहीं करते अगर पुकार करते हैं तो दुनिया के सामान की ही करते हैं। हम अपने बाहुबल पर जोर रखते हैं लेकिन अपने मन में गुरु का बल महसूस नहीं करते, गुरु का बल साथ लेकर नहीं चलते।

अगर हमारे अंदर गुरु के लिए सच्ची दीनता, सच्चा प्यार आ जाए तो गुरु हमारा पसीना भी बर्दाश्त नहीं करता, वह पंखा लेकर हवा करता है। जिस तरह शिष्य गुरु का विछोड़ा नहीं सह सकता उसी तरह गुरु भी शिष्य का विछोड़ा नहीं सह सकता।

16 पी. एस. वह जगह है जहाँ मैंने अभ्यास किया था अभी आप गुफा देखेंगे। मेरी सुरत लगे हुए तीसरा दिन हो गया था। मेरा सेवादार जो मेरे पास रहता था वह बहुत उदास हो गया था उसे पता था कि अब मैं शरीर में नहीं हूँ, मैं खत्म हो चुका हूँ। तीसरे दिन परमपिता कृपाल अपने वायदे के अनुसार खुद आए और उन्होंने मुझे गुफा से बाहर निकाला, मेरी पीठ थपथपाई और

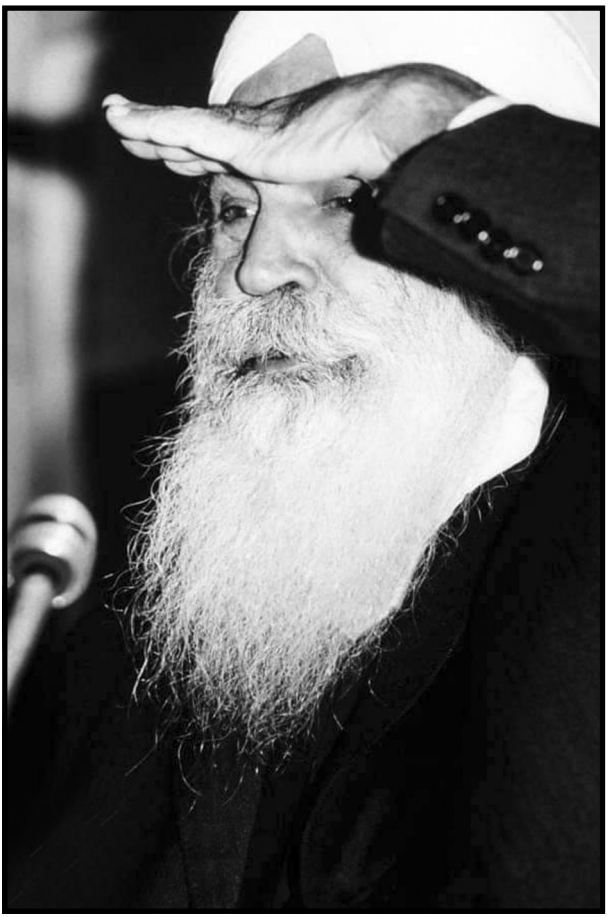

कहा एक ने तो तालीम के ऊपर अमल किया। मेरे उस सेवादार ने बताया कि महाराज जी बार-बार मेरी पीठ थपथपाते रहे मुझे शाबाश देते रहे और महाराज जी ने कहा, ''एक तो पास हुआ।'' जब मुझे होश आया तो सतगुरु ने अपने हाथों से मुझे दूध पिलाया। जब परमपिता कृपाल जाने लगे तो जुबान से यह दोहड़ा निकलाः

नाल परदेसी न्यों न लाईए चाहे लख टके दा होवे।

हुजूर ने हँसकर कहाः ***इक गल्लों परदेसी चंगा जद याद करे तद रोवे।***

आपने कहा कि मुझे भी तेरे साथ इतना ही प्यार है। परमपिता कृपाल ने कई प्रेमियों के सामने मुझसे कहा, ''हाँ भई! कुछ माँगना है तो माँग, तेरी क्या इच्छा है?'' मैं हमेशा कहता हूँ कि मैंने अपने गुरु से कभी कोई सांसारिक चीज जायदाद या मान-बड़ाई नहीं माँगी, मैंने अपने गुरु के आगे खड़े होकर यही कहाः

नैन ललारी नैन कसूंबा, नैन नैणां नूं रंग दे।
नैन नैणां दी करन मजूरी ते मेहनत मूल नहीं मंगदे।।

अब तो मन कर चुका पुकार, राधा स्वामी करो उधार।।

स्वामी जी महाराज ने इस शब्द में शिष्य और गुरु का रिश्ता बयान किया है कि गुरु के दिल में हजारों माता-पिता जैसा प्यार और हमदर्दी होती है। जब शिष्य गुरु को पुकारता है अपने गुरु से मिलने के लिए सच्ची तड़प पैदा करता है तो गुरु से भी रहा नहीं जाता गुरु उसे उठाकर गले से लगा लेता है।

जिस तरह बच्चा गंदा है माता-पिता बच्चे को झाड़कर उसे उठा लेते हैं उसी तरह चाहे हमने कितने ही पाप क्यों न किए हों अगर हम गुरु को पुकारते हैं तो गुरु हमें कहते हैं, ''भजन-अभ्यास करें।'' अभ्यास के जरिए हमारे सारे पाप खत्म हो जाते हैं। गुरु हमें सतसंग में समझाते हैं अगर आप भजन-अभ्यास करेंगे तो आपकी आत्मा शरीर को छोड़कर ऊपर चली जाएगी।

जिस तरह गुरु ने यह रिश्ता बयान किया है हमें भी अपने दिल में प्यार, नम्रता के भाव लाने चाहिए। सन्त-महात्माओं ने नाम की बहुत महिमा गाई है। हमारे अंदर भी उस नाम को प्रकट करने की इच्छा होनी चाहिए और गुरु के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए।

***

1 फरवरी 1983

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

धन्यवाद का दिन

आज हम सबके लिए धन्यवाद देने का दिन है। आज हर व्यक्ति को खड़े होकर परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिए सिर्फ इसी क्षण ही नहीं बल्कि हर रोज हर क्षण हमें परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए। धन्यवाद देने का सबसे बड़ा कारण यह है कि परमात्मा ने हमें यह मानव देह दी है क्योंकि निचले जामों में हम कुछ नहीं कर सकते थे। मानव देह एक सुनहरी मौका है जिससे हम वापिस अपने घर जा सकते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''हमें जीवन के हर क्षण परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिए।'' जब आप खाना खाते हैं परमात्मा का धन्यवाद करें। आप अपनी तुलना उन लोगों से करें जिन्हें भोजन का एक निवाला भी हासिल नहीं होता। आपको रहने के लिए घर मिला हुआ है आप परमात्मा का धन्यवाद करें। जो लोग सड़कों पर रहते हैं आप अपनी तुलना उनसे करें अगर आप अमीर हैं तो भी परमात्मा का धन्यवाद करें।

आप भूखे हैं तब भी परमात्मा का धन्यवाद करें। आपके पास भविष्य के जीवन के बारे में और परमात्मा के बारे में सोचने के लिए अच्छी बातें हैं, आप परमात्मा का धन्यवाद करें। यहाँ ऐसे भी बहुत से लोग हैं जो परमात्मा में यकीन ही नहीं करते। कबीर साहब कहते हैं, ''हर एक श्वांस जो हम लेते हैं वह तीनों लोकों के मूल्य के बराबर है, हमें परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए।''

एक बार धरती से पूछा गया कि तुम्हारे ऊपर पहाड़ हैं, नदियाँ हैं जानवर हैं, पेड़ हैं, इंसान हैं इन सबका बहुत बोझ है

तुम इन सबका बोझ कैसे उठा लेती हो? धरती ने जवाब दिया, ''यह मेरे लिए कोई बोझ नहीं लेकिन जब कोई नाशुक्रा इंसान मेरे ऊपर चलता है तो मुझसे उसका बोझ बर्दाश्त नहीं होता।''

हमें हर वस्तु जो मिली है उसके लिए आज के दिन ही नहीं बल्कि हर क्षण परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए। हमारे पूर्वजों के पास रहने के लिए जमीन थी उस जमीन पर फसल पैदा होती थी। आप जानते हैं कि फसल तो हर रोज पैदा हो रही है जोकि अब पहले से भी ज्यादा पैदा हो रही है तो हमें परमात्मा का ज्यादा धन्यवाद करना चाहिए। परमात्मा ने हमें मानव देह दी है जिसमें हम वापिस अपने घर जा सकते हैं।

हम जो काम करते हैं जो कुछ खाते-पीते हैं जिनके साथ मेल-जोल रखते हैं इन सभी बातों के लिए हमेशा परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए। इंसान धन्यवाद कब कर सकता है? जब वह ऊँची ताकत के कार्यरत होने का अहसास करे, क्या आपको उसका अहसास है? आपके पास शुरू करने के लिए कुछ पूँजी है कोई ताकत आपकी संभाल करने के लिए है। परमात्मा के प्रकट स्वरूप को संपर्क में लाकर आपके सभी कर्मों के लेन-देन का भुगतान करवाने वाला सतगुरु है।

आज अच्छी फसलें हो रही हैं पेड़ों पर फल उग रहे हैं और भी बहुत कुछ हो रहा है हमें इन सारी वस्तुओं के लिए रोजाना परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए।

आप परमात्मा को धन्यवाद दें कि मैं आपके पास आया हूँ, यह परमात्मा की दया है। अगर आप यह सोचते हैं कि आपको मुझसे कुछ थोड़ा सा अच्छा मिला है तो वह भी परमात्मा की दया के जरिए से ही मिला है।

क्राईस्ट ने कहा है, ''अगर आप मुझसे प्रेम करते हैं तो मेरे वचनों का पालन करें। ब्रह्मचर्य का जीवन धारण करें, सदाचार का जीवन धारण करें सबसे प्रेम करें।'' कोई पाखंड नहीं कि आपका दिल कुछ और महसूस करता है और आपकी जुबान कुछ और बोलती है दिमाग कुछ और ही सोच रहा है, यह धन्यवाद देना नहीं है।

हमारे लिए बाकी बचे हुए दिन निश्चित हैं वे धन्यवाद देने के दिन हैं। हमें परमात्मा का हर चीज के लिए धन्यवाद करना चाहिए। अब आपको इस मार्ग पर डाल दिया गया है आप ज्यादा धन्यवाद कैसे देंगे? इस पर अमल करते हुए या इसे छोड़ते हुए?

मेरे 75 वें जन्मदिन पर डायमंड जयंती मनाई गई। भारत व बाहर से सभी धर्मों के लोग वहाँ आए थे और उन्होंने बहुत ऊँची-ऊँची बातें की। जब कोई लेक्चर देने लगता है चाहे आप उस लायक हों या न हों तो वह बड़ी ऊँची-ऊँची बातें करता है। मैं जब खड़ा हुआ तो मैंने कहा, ''प्यारे मित्रों! आप मेरे इन मित्रों से बहुत बड़ी-बड़ी बातें सुन चुके हैं लेकिन सच्चाई यह है जो कुछ इन सबने कहा है मैं उसके लायक नहीं हूँ। मैं वह सब अपने गुरु के आगे भेज रहा था, यह सब उसकी दया है। यह परमात्मा की रहमत है उस गुरु की कृपा है कि आपको यह मार्ग मिला है।''

आज से हर वस्तु के लिए धन्यवाद दें लेकिन हम क्या करते हैं वह एक वस्तु जो हमारे पास नहीं उसकी वजह से बाकी वस्तुएं जो हमारे पास हैं उनके लिए धन्यवाद करना भूल जाते हैं। किसी से भी पूछो वह कहता है कि मेरे पास वह वस्तु नहीं लेकिन उन सब वस्तुओं का क्या जो हमारे पास हैं। जो भेड़ ज्यादा मिमयाती है उसके मुँह से उतना ही ज्यादा भोजन बाहर निकल जाता है। जो मिला है उसके लिए धन्यवाद करें।

हम हमेशा परमात्मा के आगे शिकायत करते हैं कि मुझे यह नहीं मिला वह नहीं मिला। पिछले कर्मों के फलस्वरूप हमें जो भी मिला है उसके लिए परमात्मा के धन्यवादी बनें। परमात्मा का सबसे बड़ा धन्यवाद यह है कि उसने हमें मनुष्य का जामा दिया है और उससे आगे वह भी धन्यवाद देने का महान दिन है जब आपको वापिस परमात्मा के पास जाने वाले मार्ग पर डाला गया है।

सारे संसार में शांति हो। मेरे ख्याल से आज से आप अपने घर वापिस जाने के लिए भजन में ज्यादा समय लगाने की कोशिश करेंगे आप जितनी जल्दी वहाँ पहुंचेंगे आपके लिए बेहतर होगा। क्राईस्ट ने कहा है, ''जिसने मुझे यहाँ भेजा है मुझे उसका काम दिन रहते हुए करना है, रात आने वाली है। रात कब आती है? जब आप शरीर छोड़ जाते हैं तभी दिन है जब आप जीवित हैं।''

हमें हर चीज के लिए परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए कभी-कभी अवाँछनीय चीजें भी आ जाती हैं जो हमारे अपने कर्मों का ही प्रतिकर्म है और हम उनका भुगतान कर रहे हैं। जब किसी चीज की कमी होती है तो हम खफा हो जाते हैं लेकिन जो मिला है उसके लिए परमात्मा का धन्यवाद नहीं करते।

परमात्मा हमारा सच्चा पिता है वह हमारे सभी कर्मों के भुगतान करने का प्रबंध करता है। हमें उसका धन्यवाद करना चाहिए कि हम इस जीवन में सारा कर्ज उतारकर अपने घर वापिस जा रहे हैं। अगर हम परमात्मा के साथ नहीं जुड़ते सिर्फ संसार की भौतिक वस्तुओं के साथ जुड़ते हैं तो स्वाभाविक है कि हमारी चेतनता कम हो जाएगी, हम निचले जामों में चले जाएंगे।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''उसे ही जिंदा समझें जिसे परमात्मा का ज्ञान है। जो परमात्मा को आमने-सामने देखता है।

जैसे हम एक-दूसरे को देखते हैं और जो उसे नहीं देखते वे मृत हैं।'' हमें आभारी होना चाहिए कि हमें मानव देह प्राप्त है जो सबसे ऊँची बख्शिश है। अब हमें इस मार्ग पर डाल दिया गया है। अब हमें क्या करना चाहिए? आप गुरु के हुक्म का पालन करें जितनी देर हो सके उस सर्व चेतनता के साथ जुड़ें।

अगर आपने मानव तन पाकर जोकि परमात्मा का सच्चा मंदिर है परमात्मा को नहीं पाया तो आपके सभी कर्म पढ़ाई-लिखाई, खाना-पीना, मौज-मस्ती, शरीर को सजाना-सँवारना ये सब इस तरह हैं जैसे किसी मुर्दा लाश को सजा-सँवार रहे हैं। आपको मानव देह मिली है इसका ऊँचा लक्ष्य परमात्मा को जानना है।

इंसानी जामें के दो मकसद हैं। पिछले जन्मों से चले आ रहे कर्ज का भुगतान करना और इसके आगे का मकसद है परमात्मा को जानना, परमात्मा से प्रेम करना। प्रेम हर हृदय में बसता है। हमें सबसे प्रेम करना चाहिए अगर हम ऐसा नहीं करते तो सन्त कहते हैं, ''पशु, पक्षी, रेंगने वाले कीड़े-मकोड़े हमसे बेहतर हैं।''

हमें मानव देह मिली है और हमने कुछ नहीं किया। आपको ये सब बख्शिशें किसी सन्त स्वरूप से मिलकर ही प्राप्त हो सकती हैं। जब आप किसी सन्त के पास जाते हैं तो वह आपको परमात्मा के साथ मिला देता है। सभी सन्त कहते हैं कि आपको अपने पैरों पर खड़े होना चाहिए।

परमात्मा की कलम से लिखे हुए लेख जो आपसे जुड़े हैं उनका सारा कर्ज उतार दें और दूसरों की मदद भी करें। आप जो भी कर्म-धर्म, रीति-रिवाज कर रहे हैं ये जमीन की तैयारी मात्र है। जिसके लिए आप ये सब तैयारी कर रहे हैं अगर वह आए ही न तो आपका क्या भविष्य है?

परमात्मा ज्योति है, परमात्मा आकाशमंडल का संगीत है। हम मोमबत्ती जलाते हैं, घंटा बजाते हैं ये सब परमात्मा के चिह्न है परमात्मा को देखना नहीं। ये आपको अच्छा परिणाम देंगे क्योंकि ये परमात्मा के नाम पर किए गए कर्म हैं लेकिन मैं करता हूँ कि भावना नहीं गई अगर अहंकार है तोः

जैसा बोवोगे वैसा काटोगे।

अच्छे ख्याल अच्छा परिणाम लाएंगे और बुरे ख्याल बुरे परिणाम लाएंगे। सन्त कहते हैं कि जो कर्म आपको परमात्मा के नजदीक ले जाते हैं वे अच्छे कर्म हैं और जो कर्म आपको परमात्मा से दूर ले जाते हैं वे बुरे कर्म हैं।

आपने देखा होगा कि कोई चीज एक धर्म में अच्छी है लेकिन वही चीज दूसरे धर्म में अच्छी नहीं मानी जाती। सिक्खों के गुरुद्वारे में नंगे सिर बैठना अनादर का सूचक है लेकिन चर्च में नंगे सिर बैठना आदर का प्रतीक है।

हम इस मानव तन में सुबह से लेकर शाम तक एक उम्र कैदी की तरह काम करते हैं जिसके हाथ-पल्ले कुछ भी नहीं आता। आप किसी सन्त से मिलें और उससे जानें कि आपके कितने ऊँचें भाग्य हैं? आपको इंसान का जामा मिला है और इससे भी ज्यादा अच्छा भाग्य हमारा इंतजार कर रहा है जब हम मानव देह में प्रकट भगवान के संपर्क में आए।

आपके अंदर पहले से ही परमात्मा मौजूद है, सन्त आपको आपके अंदर वाले परमात्मा के साथ जोड़ते हैं। हम बाहरी दुनिया में खोकर परमात्मा को ही भूल गए हैं आप जब तक अपने आपमें सिमटकर अपने आपको नहीं पहचानेंगे तब तक परमात्मा को कैसे

जान पाएंगे? परमात्मा सन्तों के जरिए ही मिलता है। बंद आँखों वाला आदमी खुली आँखों वाले को कैसे देख सकता है?

जब परमात्मा आपके अंदर तड़प देखता है कि आप उसके बिना नहीं रह सकते तो वह आपको अपने संपर्क में लाने का इंतजाम करता है। वह आपके पास आता है। आप नहीं जानते कि वह कौन है? लेकिन वह हमें मौका देता है। जब हम सतसंग सुनते हैं तो हम उस ओर आकर्षित होते हैं और मार्ग पर डाल दिए जाते हैं।

आज धन्यवाद देने का दिन है, परमात्मा को धन्यवाद दें, धन्यवाद न करना घोर अपराध है। अगर हम आज से यह सबक सीख लें कि परमात्मा ने हमें जो वस्तुएं दी हैं हम उसके लिए धन्यवाद करें। अगर आपके तीन, चार या पाँच बच्चे हैं और वे सभी आपस में लड़ रहे हैं कि मुझे यह नहीं मिला, वह नहीं मिला लेकिन उनको बहुत कुछ मिला है। उनमें एक ऐसा बच्चा भी है जो कहता है, ''पिता जी! धन्यवाद आपने मुझे ये वस्तुएं दी हैं।'' पिता को कौन सा बच्चा पसंद आएगा?

परमात्मा वापिसी में हमसे कुछ भी नहीं चाहता। हमें जो मिला है हम उसके लिए तो आभारी हों, हमें नाशुक्रा नहीं होना चाहिए। मेरे ख्याल से यह एक महान गुण है अगर आप आज से ही इसे धारण करेंगे तो आप जल्दी ही बहुत ज्यादा तरक्की करेंगे।

***

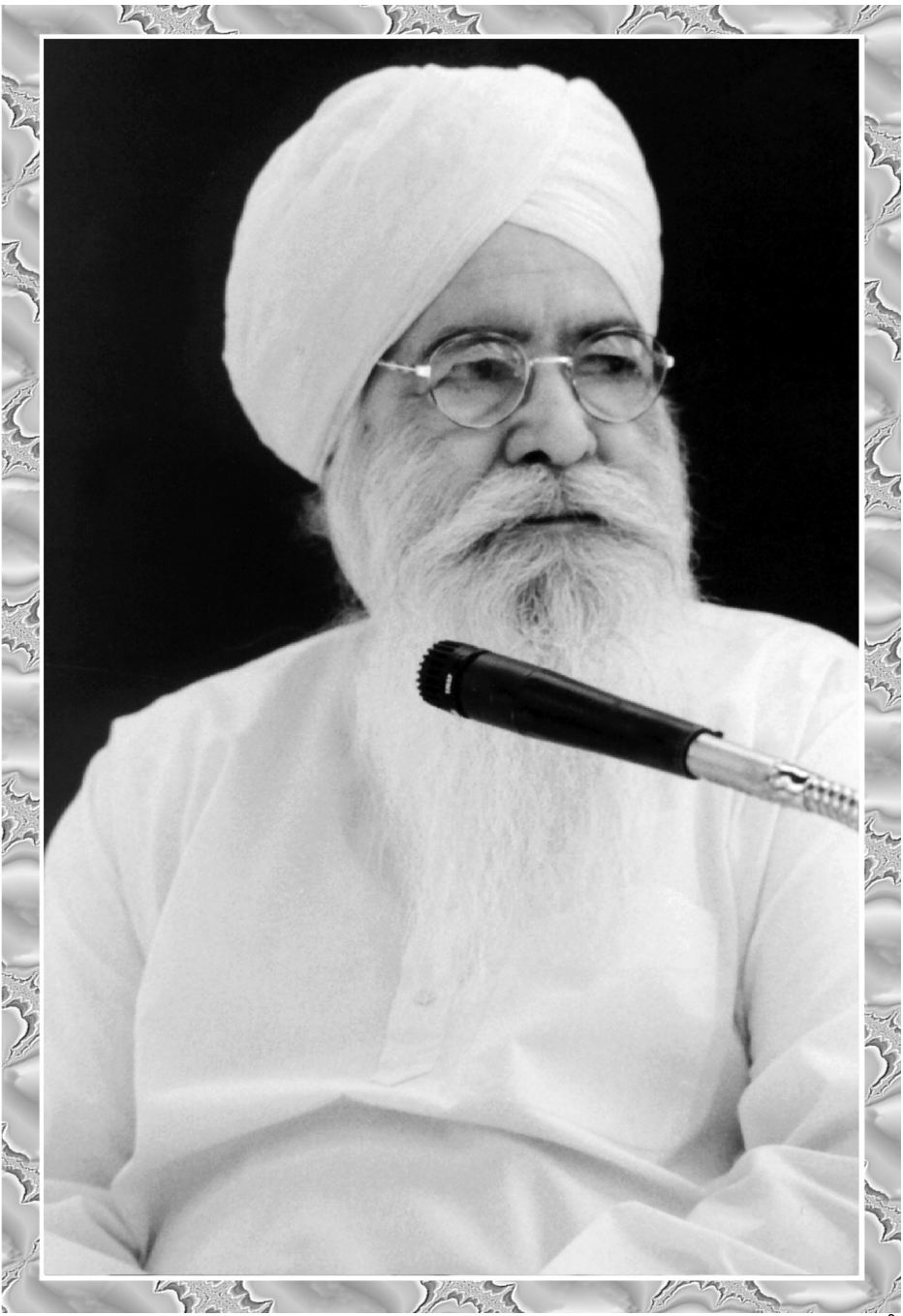

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब

20 मार्च 1996

एक प्रेमी :- *बहुत प्यारे महाराज जी! आप मुझे समझाएं कि मैं अपनी गलतियों को किस तरह से दूर करूं। मैं डायरी रखता हूँ और जब डायरी देखता हूँ तो मुझे पता लगता है कि मैं वही गलतियाँ बार-बार कर रहा हूँ। मुझे किस तरह से डायरी लिखनी चाहिए ताकि मैं अपनी गलतियों से छुटकारा पा सकूँ?*

बाबा जी :- परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। कल स्वामी जी महाराज की बानी पर सतसंग हुआ था। हमें इस सतसंग की टेप को बार-बार सुनना चाहिए। जब यह सतसंग मैगजीन में छपेगा, प्रेमी इसे पढ़ेंगे तो उन्हें इससे बहुत मदद मिलेगी।

बहुत से प्रेमी डायरी रखते हैं और डायरी भरते भी हैं लेकिन डायरी की महानता को नहीं समझते। डायरी की यही महानता है क्या हमें दिन भर के ऐब याद हैं? अगर याद हैं तो हम उन्हें डायरी में लिख लेते हैं फिर दूसरी बार वही ऐब होता है तो इसका मतलब यह है कि हम गुरु के साथ मजाक करते हैं। पंजाबी की कहावत है:

पंचायत आई सिर मत्थे परनाला ओत्थे दा ओत्थे।

प्यारेयो! अगर चोर हर रोज चोरी करे और अफसर के सामने पेश भी हो तो अफसर उसे सजा दे देता है लेकिन सन्तमत में सजा नहीं देते। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''काल के राज्य में न्याय है दयाल के राज्य में बख्शिश है। वे बख्शते तो हैं उस बख्शिश से आपकी आत्मा की ही सफाई होगी लेकिन आप अंदर नहीं जा सकेंगे चढ़ाई नहीं कर सकेंगे।''

सन्तमत कोई समाज नहीं इसमें शिष्यों की गिनती नहीं की जाती क्योंकि कोई फौज खड़ी नहीं करनी होती, सन्तमत अपने आपको सुधारने का मत है। सन्तों का भाव ज्यादा से ज्यादा आत्माओं को परमात्मा से मिलने के लिए तैयार करना है। सतसंगी में से हमेशा प्यार की खुशबू आनी चाहिए। सतसंगी जब किसी दूसरे बंदे को मिले तो उसे महसूस हो कि यह किसी पूरे सन्त पूरे गुरु के पास जाता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

माड़ा कुत्ता खसमें गाली।

अगर सेवक गलती करता है तब दूसरे लोग उसे तो गाली निकालते ही हैं और उसके गुरु को उससे ज्यादा गालियां निकालते हैं कि इसका गुरु इसे सुधारता नहीं।

प्यारेयो! मेरी जिंदगी का एक ऐसा वाक्या है आज से तीस साल पहले एक आदमी आगरा से नाम लेकर आया। वह शराब पीने लग गया। उन शराबियों की महफिल मेरे मकान से थोड़ी दूरी पर ही लगी हुई थी। महफिल वाले उसे स्वामी जी कहते थे कि स्वामी जी के हाथ की शराब पिओ। वे शराब पीते-पीते लड़ने लगे। वे लोग उस स्वामी को पीटकर मेरे दरवाजे के सामने फैंक गए और मुझसे कहने लगे, ''तू अपने स्वामी को संभाल ले।''

आप सोचकर देखें! जिन्होंने उसकी पिटाई होती हुई देखी या बाद में जिन्होंने बाद में उसकी संभाल की वे कितना बुरा महसूस कर रहे थे। बेशक मैं आगरा का सतसंगी नहीं था लेकिन इतना तो लोग जानते हैं कि इनकी शाखा आगरा में है; स्वामी जी महाराज आगरा में ही हुए हैं।

प्यारेयो! एक गलती ही जिंदगी को खुष्क कर देती है। महाराज जी कहा करते थे, ''पार पहुँचा हुआ बंदा भी गलती करके गिर

जाता है, हमें गलती करने से पहले सोचना चाहिए कि इससे मेरी आत्मा पर कितनी मैल चढ़ेगी, मेरे गुरु की कितनी बदनामी होगी? डायरी जीवन की पड़ताल है। परमात्मा कृपाल ने हमारे ऊपर दया करके हमें सुधरने के लिए एक अच्छा मौका दिया है।

एक प्रेमी :- *सन्त जी! कृपा करके आप मुझे मेरी नादानी के लिए क्षमा करें। क्या आप अपने दृष्टिकोण से हमें बता सकते हैं कि आश्रम का क्या मकसद है?*

बाबा जी :- महाराज कृपाल ने आश्रम के बारे में काफी कुछ लिखा है। आशा करता हूँ कि आपको पढ़कर भी तसल्ली कर लेनी चाहिए। सबसे पहले रहने की जगह को ही आश्रम कहा जाता है।

एक प्रेमी :- *महाराज जी! जिस दिन भजनों की बारी थी उस दिन आपने इस बात पर जोर दिया था कि हमें बच्चों की रहनुमाई करनी चाहिए। मेरा सात साल का लड़का है, उसे धुन प्राप्त है। वह सोमवार से वीरवार तक मेरे साथ रहता है और शुक्रवार से रविवार तक अपने पिता के साथ रहता है जोकि सतसंगी नहीं है। वह बच्चे को मीट खिलाता है। ऐसे हालात में आप मुझे सलाह दें कि मैं किस तरह अपने बेटे की रहनुमाई कर सकती हूँ? क्योंकि वह जो कुछ भी मुझसे सीखता है लेकिन जब वह अपने पिता के पास जाता है तो उसे मेरी शिक्षा के उलट समझाया जाता है?*

बाबा जी :- हाँ भई! जिसका ऐसा कोई पर्सनल मसला होता है उसे ऐसे सवाल दर्शनों के दौरान पूछने बेहतर हैं।

एक प्रेमी :- *सतसंगी को कैसे पता लगेगा कि इस कठपुतली की डोर सर्वशक्तिमान परमात्मा हिला रहा है या काल हिला रहा है? हम जब भी कोई काम करते हैं तो हमें कैसे पता लगेगा कि यह काम हमसे परमात्मा करवा रहा है या काल करवा रहा है?*

बाबा जी :- हाँ भई! इस सवाल का जवाब हर सतसंगी को गौर से समझना चाहिए। मैं आमतौर पर प्रेमियों को सन्तबानी मैगजीन पढ़ने की काफी सलाह दिया करता हूँ। इस सवाल के बारे में मैगजीन में बहुत बार छप भी चुका है फिर भी मैं आज आपको एक बार डिटेल में बता देता हूँ।

काल ने हर आत्मा की डोरियां अंदर के मंडलों में छिपाकर रखी होती हैं। इसलिए सन्त पूरे गुरु पर जोर देते हैं क्योंकि पूरा गुरु ही नामदान के वक्त काल से डोरियां लेकर सच्चखंड में बाँधता है। काल कोई हौवा नहीं यह उसी प्रभु परमात्मा की बनाई हुई एक शक्ति है। आप अनुराग सागर पढ़कर देखें! काल ने भक्ति की और सतपुरुष ने इसे प्यार वश आत्माएं सौंप दी। जिस सन्त की ऊपर रसाई नहीं होती वह काल से डोरियां नहीं ले सकता।

जो काल की भक्ति करते हैं उन आत्माओं को काल किसी हद तक स्वर्ग-बैकुंठ देता है। जो काल के राज्य में अच्छा डिसिप्लेन नहीं रखते उनके लिए काल ने सजा के मंडल नर्क बनाए हुए हैं। काल जब हमारी डोर हिलाता है तो हमारा ख्याल बाहरमुखी भक्ति की तरफ या विषय-विकारों, शराबों-कबाबों की तरफ जाता है।

जब आपके अंदर काम, क्रोध, चुगली, चोरी के बुरे ख्याल उठते हैं उस समय सतसंगी को होशियार हो जाना चाहिए कि इस समय काल मेरी डोर हिला रहा है। जब आपके अंदर काम, क्रोध और काल की शक्तियों की लहर उठती है आप उस समय भजन में बैठें अगर फिर भी ये ख्याल जबरदस्त हैं तो आप गुरु के आगे फरियाद करें। जब आपका मन शान्त होता है आपके अंदर अच्छे ख्याल पैदा होते हैं आप उस समय का फायदा उठाएं कि अब मुझे सतगुरु प्रेरित कर रहा है आप उस समय भजन पर बैठें।

सतसंगी को बहुत बारीकी से अपने अंदर मन की चौंकीदारी करनी पड़ती है। सतसंगी को पहले संघर्ष करना पड़ता है क्या काल का ख्याल आ रहा है या गुरु का आ रहा है? गुरु आपको हमेशा ही बुराई से हटाएगा और अंदर भजन की प्रेरणा देगा।

प्यारेयो! हमें सारी जिंदगी सोच-विचार करते नहीं रहना चाहिए। हमें अभ्यास भी करना है, बाद में जब ऊपर चढ़ाई हो जाती है तो हमारा ख्याल ही बदल जाता है।

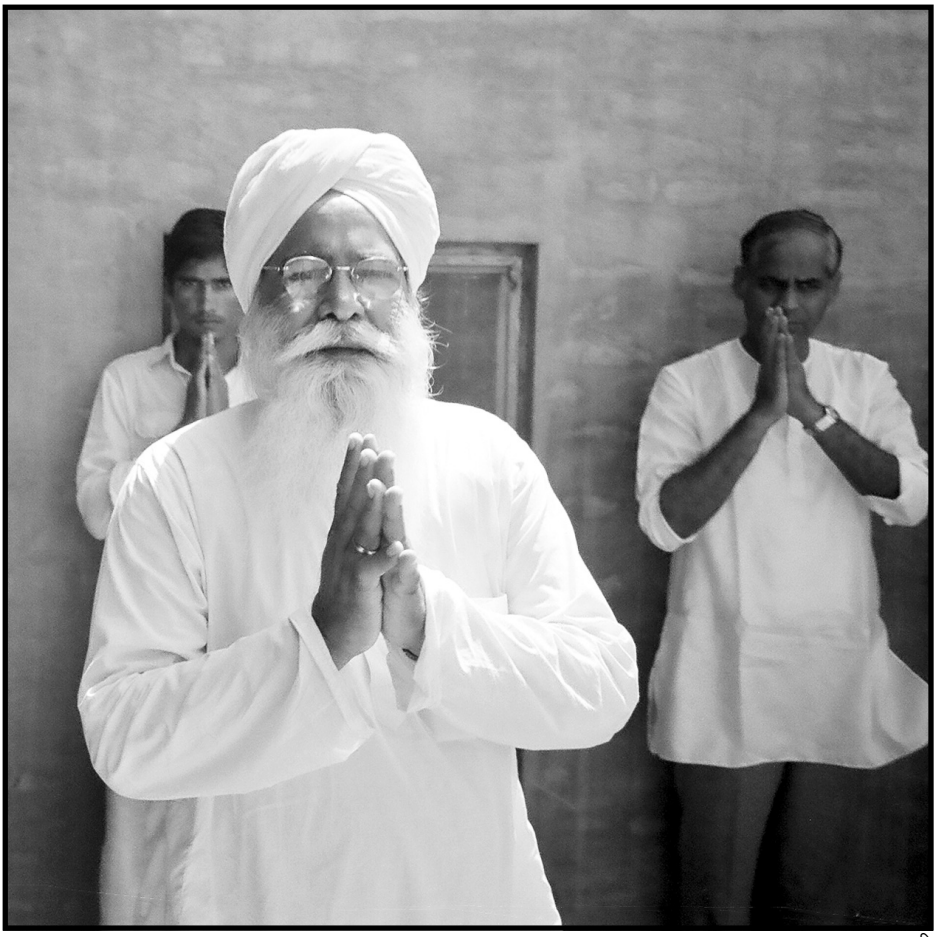

आज हम जिन बुराईयों को छोड़ नहीं सकते हाँलाकि हम रोते-कुरलाते भी हैं फिर भी जहर खाते हैं। अगर आप थोड़ी सी हिम्मत करके तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाएं तो आपका डायरेक्शन ही बदल जाएगा फिर आप इस तरफ सोचेंगे भी नहीं। जितना बुराई करने में आनन्द आता है उतना ही बुराई छोड़ने में भी आनन्द आएगा।

एक प्रेमी :- *महाराज जी! क्या आप हमें बताएंगे कि सतसंगी के जीवन में जो घटनाएं घटती हैं, वे घटनाएं अपनी इच्छा से होती हैं या भगवान की मौज की वजह घटती हैं? या कर्मों के कानून के हिसाब से हमारी किस्मत बनी उसके हिसाब से वे घटनाएं घटती हैं? इन बातों में काल का क्या रोल है? हमारी जो छोटी-छोटी या बड़ी-बड़ी इच्छाएं होती हैं ये कैसे एक-दूसरे से मेल खाती हैं? हमारी इच्छा पर कितना निर्भर करता है और कितना परमात्मा की मौज पर निर्भर करता है? हमारी किस्मत में क्या लिखा है या यह सब हमारे कर्मों की वजह से होता है?*

बाबा जी :- हाँ भई! मुझे अफसोस है कि प्रेमी ने अपना सवाल साफ तरीके से नहीं लिखा। बहुत से प्रेमी सवाल तो लिख लेते हैं लेकिन उसे दोबारा पढ़ते नहीं। आगे जवाब भी देना है और प्रेमियों ने वह जवाब सुनना भी है। ऐसा न हो कि मेरे जवाब पर सब लोग हँसे।

मैं हमेशा ही महाराज सावन सिंह जी का यह वाक्य दोहराया करता हूँ। आप सदा कहा करते थे, ''दुख-सुख, गरीबी-अमीरी, बीमारी-तंदरूस्ती ये छह चीजें हम सब लिखवाकर लाए हैं। शरीर की रचना बाद में होती है प्रालब्ध पहले बन जाती है। तुलसीदास जी ने कहा थाः

पहले बनी प्रालब्ध , पाछे बना शरीर।
तुलसीदासा खेल अचरज है पर मन नहीं बंधदा धीर।।

मैं आपको उदाहरण देकर समझाऊंगा कि किस तरह हमारी प्रालब्ध बनती है। जिस तरह हम स्कूल का कार्यक्रम बनाते हैं उसके अलग-अलग पीरियड मुकर्र करते हैं कि इस पीरियड में यह पढ़ाई होगी और उस पीरियड में यह पढ़ाई होगी। इसी तरह क्लास बदलती रहती है। उसके साथ ही टीचर कार्यक्रम के अनुसार पढ़ाई शुरू कर देता है।

इसी तरह हमारी प्रालब्ध दुख-सुख, गरीबी-अमीरी, बीमारी-तंदरूस्ती यह सब कुछ पहले से बना हुआ है। जिस तरह पीरियड पहले से बने होते हैं, उसी तरह यह भी बदलते रहते हैं। जिस तरह हर सबजेक्ट का मकसद होता है लेकिन बच्चे को उसके बारे में पहले पता नहीं होता, जब वह पढ़ लेता है बाद में पता लगता है कि इसका क्या मतलब था। इसी तरह सुख और दुख के पीरियड बने हुए हैं उनके मुताबिक घटना घटती चली जाती है। जीव जहाँ कर्म भोग रहा है वहाँ तक पहुँचा नहीं होता इसलिए यह लाचार है।

अगर कोई एक्सीडेंट हो गया, बीमार हो गए तो हम रोते-चिल्लाते हैं। घर में कोई खुशी हो गई, व्यापार में बढ़ोतरी हो गई तो उसका क्रेडिट अपने ऊपर लेते हैं। हम काल के राज्य में आए हुए हैं। हम काल के राज्य में ही कर्म करते और भोगते हैं। काल के राज्य में मौत और पैदाईश है। काल के राज्य में ही सुख और दुख हैं। काल के राज्य में ही गरीबी-अमीरी, बीमारी-तंदरूस्ती है।

प्यारे बच्चो! दयाल के राज्य में न मौत है न पैदाईश है, न सुख है न दुख है; वहाँ शान्ति है। हम सुख-दुख जो भी महसूस करते हैं इसका हमारी आत्मा पर कोई असर नहीं होता, सुख-

दुख का संबंध हमारे मन के साथ ही है। बेशक लोहा अग्नि में पड़कर जलता नहीं लेकिन वह अग्नि का रूप हो जाता है। हमें जो शरीर पुण्य-पापों की वजह से मिला है यह बीमारियों का खोल है लेकिन आत्मा रहती तो इस पिंजरे के अंदर ही है। बेशक इसके ऊपर असर नहीं लेकिन आत्मा रह तो इसी घर में रही है।

जब हम सिमरन के जरिए अपने ख्याल को दोनों आँखों के दरम्यान एकाग्र कर लेते हैं वहाँ आकर स्थूल पर्दा उतर जाता है। आगे सूक्ष्म और कारण पर्दा है जब ये तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं तब हमें हर घटना का ज्ञान हो जाता है कि यह घटना क्यों घटी, इसके पीछे क्या कारण था? यहाँ पहुँचे हुए महात्मा सुख-दुख में परमात्मा में नुख्स नहीं निकालते और न ही वे अपने आपको क्रेडिट देते हैं। वे कहते हैंः

करे कराए आपे आप, मानुख के कछु नाहीं हाथ।

सच्चखंड पहुँचा हुआ महात्मा इस संसार को तमाशे की तरह समझता है। वह इस संसार में दिल नहीं लगाता इसे अपना घर नहीं समझता सिर्फ तमाशा ही समझता है।

प्यारेयो! हमें हमेशा ही दिल लगाकर भजन-सिमरन करना चाहिए। सन्त हमें काल की जेल से छुड़वाने के लिए, कर्मों की कैद से बरी करने के लिए आते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जब सतसंगी को नाम मिल गया तो उसे समझ लेना चाहिए कि पहले जो कुछ हो गया उसकी तो गुरु ने माफी दे दी है और आगे के लिए रास्ता बता दिया है। बेटा! यह तेरा रास्ता है अगर तू इस रास्ते से भटक जाएगा तो अपनी मंजिल पर देर से पहुँचेगा।''

20 मार्च 1996

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा सेवादारों के लिए संदेश

संदेश

कृपाल आश्रम, सरी कनाडा 18 मई 1985

पूरे ग्रुप का स्वागत है, मैं आप सबसे मिलकर बहुत खुश हूँ। आपने अपने घर के मजबूत बंधनों को छोड़कर यहाँ निस्वार्थ सेवा की है जिसके लिए मैं आप सबका धन्यवाद करता हूँ।

पहले दिन जब मैं सेवादारों से मिला था तब मैंने यह कहा था कि सेवा करना बहुत आसान है लेकिन इसे संभालकर रखना बहुत मुश्किल है। मैंने आपको सलाह दी थी कि आप अपने आपको बचाकर रखें। अहंकार से परहेज करें किसी की निंदा न करें। अहंकार आने से और निंदा-चुगली करने से हम बहुत सारी रूहानी दौलत खो बैठते हैं।

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि मुझे मेरे गुरु से केवल प्यार ही मिला है और मैं संसार में यहाँ-वहाँ केवल प्यार बाँटने के लिए ही जाता हूँ। मेरे गुरु कृपाल प्यार का सागर थे और मैं प्यार का पुजारी था। मैं यहाँ आप लोगों को प्यार ही समझाने के लिए आया हूँ। मैंने आपको प्यार का रास्ता दिखाया है।

मैं आशा करता हूँ कि आप एक-दूसरे के लिए प्यार व सत्कार रखेंगे और प्यार से अपना भजन सिमरन करेंगे।

***

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत,

हर साल की तरह इस साल भी बाबा जी की अपरम्पार दया से अहमदाबाद में 5, 6 व 7 जुलाई 2019 को भजन-अभ्यास और सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों से प्रार्थना है कि नीचे लिखे पते पर समयानुसार पहुँचकर बाबा जी की दया प्राप्त करें।

श्री देशी लोहाणा विद्यार्थी भवन,
फुटबाल ग्राउंड के सामने (कांकरिया झील के पास)
अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)
फोन - 98 98 46 53 69 ■96 38 75 20 20 ■98 24 06 00 98

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम में सतसंग का कार्यक्रमः

02, 03 व 04 अगस्त 2019